International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-1 Jan-Feb-2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदानो का अध्ययन

Abhishek Kumar Pant
Assistant Professor
Department of Commerce
LSM Govt. P.G. College
Pithoragarh (Uttarakhand)

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा यहाँ की अर्थ व्यवस्था मिश्रित हैं अंग्रेजी शासन से पूर्व यहाँ विश्व के अन्य देशों के मुकाबले काफी सम्पन्नता और धनधान्यता थी अत्यन्त उपजाऊ भूमि और कल कल बहती दूध सी नदियाँ पर्याप्त जल स्त्रोत बड़े–बड़े मैदान जल वायु विविधता अपार खनिज व वन सम्पदा पशुधन व समुद्री सम्पदा तथा अपार जन शक्ति के बल पर यह देश सोने की चिड़िया कहलाता था। जिसमें महिलाओं ने भी बराबर अपनी सहभागिता व योगदान दिया था। किन्तु अंग्रेजों की दोषपूर्ण व शोषणकारी नीतियों के कारण 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक आते–आते यहाँ गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, विषमता तथा शोषण का सम्राज्य व्याप्त हो गया साथ ही बढ़ती जनसंख्या अकाल सूखा व बाढ़ रूपी प्राकृतिक आपदाओं के साथ साथ राजनैतिक भ्रष्टाचार ने भी महान भारत को समृद्धि से आर्थिक विपन्नता की ओर धकेलने में आग में घी का काम किया जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था कमजोर व मिश्रित होती चली गयी। यही कारण है कि आज स्वतन्त्रता के 75 साल के पश्चात भी हम एक विकासशील देश या तीसरी दुनिया के समूह में रहकर ही संतुष्ट है।

मुख्य शब्द –भारतीय अर्थव्यवस्था**,** गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, महिला सहभागिता आदि

प्रस्तावना

भारतीय महिलाये ग्रहस्थ रूपी गाड़ी के दो पहियों मे से एक की कहावत को चरितार्थ करते हुए जिस तरह सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन किया है ठीक उसी प्रकार पश्चिमीकरण, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण आधुनिकीकरण तथा वैश्वीकरण की विकासवादी सीढ़ियां चढ़ते हुए अर्थव्यवस्था के संपोषण व समावेशी विकास में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है यही कारण है वैश्विक उद्योगपतियों की सूची में आज देश की किरण मजूमदार शॉ, स्वामी पीरामल, अरुन्धति भट्टाचार्य, चन्दा कोचर, नैनालाल किदवई, सावित्री जिन्दल नामक महिलाओं को स्थान मिलता है बकौल अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष प्रमुख श्रीमती किस्टीनलगार्ड ''वैश्विक अर्थव्यवस्था के धुंधले

आकाश में भारत एक चमकता सितारा है।''[1] अर्थशास्त्रियों ने भी भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था घोषित किया है जो महिला सहभागिता से ही सम्भव हुआ है। लेडी श्रीराम कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय में भारत की अर्थव्यवस्था से प्रसन्न श्रीमती लगार्ड ने कहा ''भारत का विकास समावेशी हो तथा उसमें महिलाओं को भी समान अवसर प्राप्त हो साथ ही उसकी सुरक्षा भी जो कि नैतिक रूप से ही नही बल्कि आर्थिक सम्रद्धि के लिए भी आवश्यक हो इन महिलाओ द्वारा भारत सरकार के बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान की भी सराहना की गयी।''[2] लेकिन यह सत्यता से आज भी बहुत दूर है। श्रीमती लगार्ड का भारतीय अर्थव्यवस्था की उत्तरोत्तर प्रगति पर एक महत्वपूर्ण व्याख्यान अग्रलिखित बिन्दुओं पर केन्द्रित था अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक रूप के परिप्रेक्ष्य में भारत विश्व की रेगने वाली गति के विपरीत तीव्रता से गतिमान है जो शीघ्र ही देश को विशालतम अर्थव्यवस्था बना देगा। जो कि 2009 के मुकाबले 2019 तक दोगुने से भी ज्यादा होगी और जापान, जर्मनी के साथ ही तीन मुख्य अर्थव्यवस्थाओं रूस, ब्राजील तथा इण्डोनेशिया के संयुक्त उत्पादन से भी आगे होगी।''[3]लेकिन आज हमारे देश की अर्थव्यवस्था लगातार नीचे गिर रही है ऐसा नहीं होना चाहिये। भारत अपनी प्रतिभाओं के बल पर विशेषतः आधी दुनिया अर्थात् महिलाओं के दम पर न केवल सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बल्कि मितव्ययी मंगल मिशन, योग, आयुर्वेद, वॉलीबुड तथा चिकन टिक्का मसाला के माध्यम से आर्थिक विकास दर की इसी साल चीन को पीछे छोड़ सकता है। आज यह सिर्फ सपने जैसा ही लगता है। जबकि 2030 तक यह विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या का स्तर भी प्राप्त करेगा।[4] अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष में एशिया प्रशान्त क्षेत्र के सहायक निदेशक पॉल कमीशन ने भी अपने वक्तव्य में भारतीय रिवर्ज बैंक की सख्त मैद्रिक नीति की सराहना, मंहगाई दर 2013 में 11 प्रतिशत के मुकाबले 2015 के प्रारम्भ में 5.1 प्रतिशत तक आ गयी थी उन्होंने उपरोक्त सभी मंगल संकेतों से भविष्य के भारत के ग्लोबल ग्रोथ इंजन बनने की मंगलकामनाएं की।[5] परन्तु आज 2022 जुलाई में अर्थव्यवस्था से शुभ संकेत नहीं मिल रहे है ऐसा प्रमाणित होता है कि उपरोक्त विचार भारत के 2019 के चुनावों को प्रभावित करने के लिये ही थे। उपरोक्त के अतिरिक्त भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान गतिशीलता ने महिला सहभागिता के दो संकेत और मिले जिनमें राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक नाबार्ड ने

महिला स्वयं सहायता समूहों के पूर्ण डिजिटाइजेशनकार्य झारखण्ड के रामगढ़ क्षेत्र से वित राज्यमंत्री श्री जयन्त सिन्हा द्वारा पुनः भारत की बाजार नियामक संस्था सेवी द्वारा कम्पनियों के निदेशक मंइलो मे कम से कम एक महिला निदेशक की नियुक्ति के आदेश तथा इसके विफल रहने पर कानूनी कार्यवाही के संकेत देना भी भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान की अनिवार्यता को स्वीकार करता है।[6] वैसे तो भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला सहभागिता अपने आदिमकाल अर्थात ्भारतीय सभ्यता के आरम्भ से ही रही है क्योंकि भारतीय अध्ययनो में हम देखते हैं कि मानव समाज अपने शिकार युग में भोजन इकट्टा करने में महिला सहयोग लेता था कृषि युग से आज औद्यौगिकीकरण के युग में भी महिलाऐं खेत खलिहानों से लेकर कुटीर लघु एवं कल कारखानों में भी पुरुषों के साथ कन्धे से कंधा मिलाकर कार्य करती हुयी भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान कर रही हैं। अभी हाल ही में हुये एक अध्ययन में उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल क्षेत्र में मात्र ईधन इकठ्ठा करने में ही महिलाऐं प्रतिवर्ष औसतन 5400 किलोमीटर पैदल चलकर पसीना बहाती हुई पारिवारिक राजस्व की बचत और अर्थव्यवस्था में योगदान करती है।[7] किन्तु उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण के इस आधुनिकतम युग में आर्थिक रूप से महिलाओं की भूमिका और अधिक बढ़ गयी है क्योकि बढ़ती मंहगाई उपभोक्तावाद, बाजारवाद तथा नवोदित सुविधाभोगी वर्ग की तीव्र गतिशील दुनिया में जहाँ एक ओर परिवार में अधिकतम कमाऊ सदस्यों की अवधारणा का विकास हुआ वही दूसरी ओर नई राष्ट्रीय आर्थिक नीति ने भी महिला उद्यमिता में वृद्धि की है जिसे रिजर्व बैक के पूर्व गवर्नर डॉ. सी रंगराजन ने विभिन्न नीतिगत उपाय परिवर्तन, प्रतियोगी वातावरण, कार्य कुशलता में सुधार तथा उत्पादकता में वृद्धि कहा।[8] भारत में उदारीकरण व निजीकरण का प्रारम्भ जुलाई 1991 में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. पी.वी. नरसिन्हा राव के कार्यकाल में हुआ जिसमें उद्योग एवं व्यापार क्षेत्रों में उदार नीतियों को अपनाते हुए फेमा, फेरा, एम.आर.टी.पी. इत्यादि लाइसेसिग व्यवस्था उदार करके उद्योगों, व्यापार तथा विदेशी निवेश को प्रोत्साहन दिया गया। परिणामस्वरूप पुरुषों के साथ ही महिला उद्यमियों की एक नई पीढ़ी ने अर्थव्यवस्था में एक नई इबारत लिखना प्रारम्भ कर दिया और इक्कीसवीं शताब्दी के आने तक भारत में महिला उद्यमियों की सूची लम्बी होती चली गयी जिसने देश की अर्थव्यवस्था को सुख समृद्धि के नये

कीर्तिमानों की ओर अग्रसर किया। साल 2001 को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया तो भारत सरकार ने भी एक कदम आगे बढ़कर सशक्तिकरण का विशेष अभियान चलाकर उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रोत्साहन देते हुए अनेक योजनाओं को लागू किया जिसके फलस्वरूप उद्योग व व्यापार के क्षेत्र में आगे बढ़कर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी तथा फोर्ब्स, फॉर्चन जैसी वैशिक पत्रिका सूचियों में उनके नाम सम्मिलित किये जाने लगे। सन् 2012 में फोर्ब्स ने विश्व की 100 सर्वाधिक प्रभावशाली महिलाओं में सोनिया गांधी के साथ ही भारतीय महिला बैंकर चन्दा कोचर, तथा शिखा शर्मा, को शामिल किया इसी तरह फॉर्चुन की सूची में समय–समय पर मल्लिका श्रीनिवासन (टैफे) सोभना भरतिया (एच.टी. मीडिया) कर्तिगा रेडडी (फेसबुक इण्डिया) लिन डिसूजा (लिंटास) राधिका रॉय (एन.डी.टी.बी.) रीना कर्नाड, नैना लाल किदवई, मीरा सान्याल, सुल्लजा फिरोदिया मोटवानी, प्रिया पॉल, नीलम धवन, देविका सराफ, नीता अम्बानी, किरण मजुमदार शॉ, अंरूधति भट्टाचार्य भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रही है।[9] हालांकि महिला उद्यमिता का प्रारम्भ हो गया था सन् 1972 में इलाभट्ट द्वारा अपने N.G.O. (Sewa, selt,employed women's Association) के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूह का प्रारम्भ किया गया जो वर्तमान में 14 राज्यों में 3200 की संख्या में है।[10] इसी तरह कानूनी सलाहकार फर्म लॉक्वेस्ट बुबंई की कार्यकारी अधिकारी पूर्वी चौथानी पैन सिल्वेनिया लॉ स्कूल से स्नातक के बाद सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर रही है।[11] वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी भी महिला उद्यमिता में विशेष रूचि रखते हुए श्रीमती स्मृति ईरानी, स्व0 सुषमा स्वराज तथा सुमित्रा महाजन व निरमला सीतारमन जैसी वरिष्ठ महिला नेत्रिओं संग सबका साथ सबका विकास के तहत जन धन योजना D L.B.T.ए इन्द्रधनुष योजना, बेटी बचाओ– बेटी पढ़ाओं जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं के साथ ही मेक इन इंडिया जैसे आर्थिक कार्यक्रम चला रहे है लेकिन उनकी पार्टी के विधायक एक निजी हास्पीटल अलीगढ़ के भ्रुड लिंग परीक्षण करता पकड़ा गया तो इस जिले के सभी विधायक उसकी सुरक्षा में खड़े हो गये ये इससे प्रमाणित होता है कि आज के सत्ताधारी लोगों के महिलाओं के प्रति दुहरा चेहरा रखते है। तथा एफ.डी.आई. को रेलवे, बीमा, रिटेल जैसे क्षेत्रों में 26 से 49 प्रतिशत कर दिया गया है जिसके अन्तर्गत पिछली तिमाही में देशी विदेशी कम्पनियों के

57 प्रस्तावों के माध्यम से 19 हजार करोड़ रूपये का सीधा निवेश प्राप्त हुआ है। जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए शुभ संकेत है किन्तु अन्त में यह कहना भी अत्यावश्यक है। कि विशेषतः ग्रामीण भारतीय समाज में महिला शोषण दुष्कर्म तथा पर्यटकों के साथ बढ़ती असभ्यता, अभद्रता के बावजूद आज भी कुल श्रम का 2–3 भाग महिलाएं ही करती है तथा उन्हें कुल पारिश्रमिक का 1/3 भाग ही मिल पाता है।[12]

निष्कर्ष

इस शोध पत्र के निष्कर्ष के रूप मे यहाँ बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के उस महत्वपूर्ण कथन की भी प्रासंगिकता बढ़ जाती है। जो उन्होंने महिलाओं के आर्थिक योगदान के विशेष सन्दर्भों में ही कहा था कि एक सशक्त मानवीय सभ्य समाज की बुनियाद नारी ही होती है। इसीलिए उनका सशक्तिकरण ही देश का आर्थिक सामाजिक व सांस्कृतिक सशक्तिकरण होता है जिसमें सभी का सहयोग परम आवश्यक रहता है। ऐसा आज भारत में क्यों नहीं हो पा रहा है इसके पीछे आज भी धर्म का विशेष हाथ है चाहे कोई धर्म हो उसके प्राचीन ग्रन्थ महिलाओं की आजादी के खिलाफ ही रहते है और यदि अच्छाई के उदाहरण भी दिये जाते है तो बहुत कम महिलाओं के जबकि प्राचीन समय से ही महिलाओं की स्वतन्त्रता को प्रत्येक धर्म ने उभरने ही नहीं दिया है आज भी भारत में बहुत कम महिला स्वन्त्रता महसूस करती है अधिकांश नहीं। इसीलिए हमारी अर्थ व्यवस्था में उतार चड़ाव आते रहते है और ऐसा आगे भी होते रहने की पूरी सम्भाबना हे

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दैनिक जागरण– अलीगढ़ संस्करण, 19 मार्च 2015, पृ. 13
2. उपरोक्त पृ. 13
3. उपरोक्त पृ. 15
4. उपरोक्त पृ. 17

5. उपरोक्त पृ. 19

6. दैनिक जागरण – अलीगढ़ संस्करण, 17 मार्च 2015, पृ. 13

7. अमर उजाला, 27 अगस्त 2020 पृ. 12

8. प्रो. बी.सी. सिन्हा : भारतीय अर्थव्यवस्था साहित्य भवन आगरा, पृ. 246

9. दैनिक जागरण, 2 मार्च 2013 पृ. 24

10. उपरोक्त पृ. 13

11. उपरोक्त पृ. 13

12. हिन्दुस्तान अखबार 3 फरवरी 2019, पृ. 8